सीताराम सीताराम सीताराम कहिये .....

सीताराम सीताराम सीताराम कहिये।
जाहि विधि राखै राम, ताहि विधि रहिये।।

मुख में हो राम–नाम, राम–सेवा हाथ में,
तू अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में ।
विधि का विधान जान, हानि–लाभ सहिये,
जाहि विधि ....।।

किया अभिमान तो फिर, मान नहीं पायेगा,
होगा प्यारे वही जो, श्रीरामजी को भायेगा।
फल, आशा, त्याग और शुभ काम करते रहिये,
जाहि विधि ....।।

जिंदगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के,
महलों में राखे चाहे, झोंपड़ी में वास दे।
धन्यवाद निर्विवाद, राम–राम कहिये,
जाहि विधि ....।।

आशा एक रामजी से, दूजी आशा छोड़ दे,
नाता एक रामजी से, दूजा नाता तोड़ दे।
साधु–संग राम–रंग, अंग–अंग रंगिये,
काम–रस त्याग प्यारे, राम–रस पीजिये।
जाहि विधि ....।।

पूजा मंदिर में करो, मस्जिद पढ़ो नमाज।
लेकिन इतना सोच लो, टूटे नहीं समाज।।

जीते जी रक्तदान मरणोपरान्त नेत्रदान